धम से दरवाज़ा बन्द करने वाले (15:1-31)

अपने गन्तव्य स्थान के बारे में विचारों में डूबे हुए मैं गाड़ी चला रहा था और मुझे ध्यान ही नहीं रहा कि मैं कहां हूं, तभी मेरी कार किसी चीज़ से टकराई और मैं अपनी सीट से इतनी ज़ोर से उछला कि मेरा सिर कार की छत से जा टकराया। सम्भलने पर मैंने देखा कि मैं एक स्कूल के सामने था और स्कूल वालों ने छात्रों की सुरक्षा[1] के लिए कारों आदि की गति कम करने के लिए सड़क पर एक गति अवरोधक[2] लगाया हुआ था। जैसे उस गति अवरोधक की ठोकर लगी थी वैसे ही मुझे प्रेरितों की पुस्तक पढ़ते हुए अध्याय 15 पर पहुंचने पर लगता था। पौलुस अपनी मिशनरी यात्राओं को आरम्भ करने ही वाला था परन्तु मुझे लगता था कि वह सुसमाचार सुनाने के लिए नये स्थानों में जाने के अन्तिम छोर पर था। जबकि ठोकर के साथ कलीसिया की एक खलबली, अर्थात एक झगड़े के बारे में बताने के लिए लूका ने ज़ोर से आवाज़ देकर रोक दिया, जिसका मेरे साथ कोई लेना देना नहीं था (मुझे ऐसा लगता था)।

वर्षों बीत गए हैं और प्रेरितों अध्याय 15 का मेरा मूल्यांकन संशोधित हो चुका है। उस अध्याय के प्रथम भाग की घटनाएं *अतिमहत्वपूर्ण हैं* जैसा कि लूका द्वारा उन्हें स्थान दिए जाने से ही प्रकट है। यदि उस ''खलबली'' (झगड़े) का हल न किया जाता, तो हो सकता था कि इसके बाद कोई और मिशनरी यात्रा न करता! अब मुझे अहसास होता है कि उस घटना की *हर बात* का मुझ से और मेरे उद्धार से क्या सम्बन्ध है। अपने जीवनकाल में मैंने बहुत से ''मामले'' देखे हैं जिनसे कलीसिया परेशानी में पड़ी, परन्तु ये सब प्रेरितों 15 के मामले के सामने नगण्य लगते हैं।

अध्याय 14 के अंत में पौलुस और बरनबास अपनी प्रथम मिशनरी यात्रा से रोमांचित होकर लौटे। बड़े जोश के साथ उन्होंने बताया कि कैसे प्रभु ने ''अन्यजातियों के लिए विश्वास का द्वार खोल दिया'' (14:27)। पिसिदिया के अन्ताकिया, इकुनियुम, लुस्त्रा, और दिरबे में अन्यजातियों की मण्डलियां[3] स्थापित हो गईं (14:20, 21, 23)[4] और बहुत से ग़ैर यहूदी लोग मसीही बन गए थे (14:1, 21)! पौलुस और बरनबास ने दिखाया था कि दूर-दूर के स्थानों में ग़ैर यहूदी लोग वचन को ग्रहण कर रहे थे! खोया हुआ संसार प्रतीक्षा में था; आत्माओं की बड़ी फसल सामने थी! निश्चय ही हर मसीही आनन्दित होगा! परन्तु दुर्भाग्यवश, इस बात से हर कोई प्रसन्न नहीं *था* कि प्रभु ने ''अन्यजातियों के लिए विश्वास का द्वार खोल दिया।'' अभी अधिक देर नहीं हुई थी कि अन्ताकिया के

लोगों ने, धम से[5] दरवाज़ा बन्द करने की ठान ली थी। इस पाठ में हम प्रेरितों 15 के और धम से दरवाज़ा बन्द करने वालों के बारे में बात करना चाहते हैं।

अपने पाठ में लौटने से पहले, मैं यह उल्लेख करना चाहता हूं कि हम सम्भवत: गलतियों की पुस्तक में इस झगड़े के एक और वृत्तांत को देखेंगे। रूढ़िवादी विद्वानों का परम्परागत विचार है कि गलतियों 2:1-10 उन्हीं घटनाओं को बताता है जो प्रेरितों 15:1-35 में बताई गई हैं।[6] जैसे एक लेखक एफ़. डब्ल्यू. फर्रार ने इसे व्यक्त करते हुए कहा है, ''दोनों वृत्तांतों में वही लोग उसी समय, उसी जगह से, उसी उद्देश्य के लिए, उन्हीं विद्रोह करने वालों द्वारा उसी प्रतिष्ठा और परिणामों के साथ निकलते हैं।'' दोनों वृत्तातों[7] में सामंजस्य स्थापित करने में कुछ कठिनाइयां हैं, परन्तु गलतियों 2 को कहीं भी रखें, कठिनाइयां तो होंगी ही। दोनों वृत्तांत एक नहीं तो एक जैसी घटनाएं तो बताते ही हैं, इसलिए प्रेरितों 15 के अपने अध्ययन में हम गलतियों 2 अध्याय के कुछ विवरण शामिल करेंगे।[8]

कल के धम से दरवाज़ा बन्द करने वाले

झगड़ा (15:1-3)

अपनी पहली यात्रा (14:28) के बाद पौलुस और बरनबास द्वारा अन्ताकिया में परिश्रम के ''बहुत दिन'' के समय में स्पष्ट रूप से उस काम का पता चला जो उन्होंने किया था[9] जिससे कुछ यहूदी परेशान हो गए थे। दस वर्ष पूर्व यरूशलेम में अन्यजातियों के पास सुसमाचार ले जाने का प्रश्न उठा था, जब पतरस ने कुरनेलियुस के घराने को परिवर्तित किया था और स्पष्टतया उस समय यह झगड़ा सुलझ गया था (11:1-18)। जब सीरिया के अन्ताकिया में बहुसंख्यक ग़ैर यहूदियों की एक मण्डली स्थापित हुई तो यरूशलेम की कलीसिया ने एक तरह से, उस काम को इसकी आशीष देते हुए उनकी सहायता के लिए बरनबास को भेजा था (11:20-22)।

परन्तु, पौलुस और बरनबास के प्रयासों ने पुराने भय जगा दिए थे। यह स्पष्ट था कि अन्यजातियां हर हाल में वचन को यहूदियों से अधिक ग्रहण करेंगी और संसार में प्रति यहूदी, हज़ारों गैर यहूदी लोग थे। बहुत से लोग कलीसिया के साथ अर्थात गैर यहूदियों को मूर्तिपूजक संस्कृतियों, मूर्तिपूजक विचारधारा, मूर्तिपूजक प्रथाओं और मारे जाने की संभावना के भय को त्यागते हुए देख सकते थे।[10] उनका मानना था कि पूरी संगति में ग्रहण करने से पहले अन्यजातियों को उचित रूप से शिक्षा दी जाए।

कइयों के लिए, समाधान स्पष्ट था: अन्यजातियों को वही करना चाहिए था जो हमेशा उनके लिए करना आवश्यक है; उन्हें यहूदी बनना चाहिए था! मूसा की व्यवस्था अन्यजातियों के खुरदरे किनारों को मुलायम कर देगी ताकि विवेकी, व्यवस्था को मानने वाले यहूदी मसीही उनकी उपस्थिति को सहन कर सकें। (मैं उन कुछ लोगों की कल्पना कर सकता हूं जो कुरनेलियुस के मन-परिवर्तन के समय [11:2, 3] परेशान होकर कह रहे थे, ''हम ने तुझे *बताया था* कि खतनारहित अन्यजातियों को ग्रहण करने से कुछ नहीं

होने वाला। अब तो एक घोर संकट पड़ेगा!'')

''हुई हानि'' की भरपाई करने के लिए यहूदियों के सामने अन्यजातियों की अन्ताकिया की वह मण्डली थी जिसने पौलुस और बरनबास को बाहर भेजा था। हम पढ़ते हैं, कि ''फिर कितने लोग यहूदिया से आकर भाइयों को [अन्ताकिया में] सिखाने लगे कि यदि मूसा की रीति पर तुम्हारा खतना न हो तो तुम उद्धार नहीं पा सकते'' (15:1)।

ध्यान दें कि कौन आया: ''कितने लोग यहूदिया से'' विशेषकर, यरूशलेम से आए (आयतें 2-4)। ये लोग सम्भवत: वही थे जिनकी पहचान आयत 5 में ''फरीसियों के पंथ में से जिन्होंने विश्वास किया था'' के रूप में की गई थी। यहां पर पहली बार हमें बताया गया है कि पौलुस के अलावा[11] फरीसियों में से कोई और मसीही बना था। हो सकता है कि उनके मसीही बनने की बात पर हमें आश्चर्य हो, परन्तु ''उन्हें एक महत्वपूर्ण प्रश्न का गलत पक्ष लेते देखकर'' हमें आश्चर्य नहीं होता। फरीसियों की धार्मिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए,[12] उन्हें हर किसी को व्यवस्था का पालन करवाने वालों के मुखियों के रूप में देखना आसान है। अन्ताकिया में पहुंचकर उन्होंने संभवत: यरूशलेम की कलीसिया के आधिकारिकप्रतिनिधि होने का दावा किया (आयत 24) होगा। कुछ भी हो, इस तथ्य ने कि वे यरूशलेम से थे (जो अभी तक उन बारह के काम का मुख्य केन्द्र था[13]) उनकी बातों का प्रभाव बढ़ा दिया।

आगे, ध्यान दें कि उन्होंने क्या सिखाया: ''यदि मूसा की रीति पर तुम्हारा खतना न हो तो तुम उद्धार नहीं पा सकते।'' खतने की रीति दो हज़ार वर्ष पूर्व इब्राहीम के साथ बांधी परमेश्वर की वाचा का अनिवार्य भाग थी (उत्पत्ति 17:10-14, 23-27)। परन्तु, यरूशलेम से आए लोगों ने खतने को इब्राहीम के साथ नहीं जोड़ा; बल्कि, उन्होंने इस रीति को *मूसा* के साथ जोड़ दिया, जिसकी व्यवस्था इब्राहीम की वाचा दिए जाने के पांच सौ वर्ष बाद दी गई थी। उनकी दिलचस्पी केवल यह नहीं थी कि अन्यजातियों को खतने की बात मान लेनी चाहिए; बल्कि उनका लक्ष्य तो अन्यजातियों को यहूदी धर्म में परिवर्तित करके *सारी* व्यवस्था के मानने वाले बनाना था।[14] आयत 5 में हम पढ़ते हैं, ''परन्तु फरीसियों के पंथ में से जिन्होंने विश्वास किया था, उन में से कितनों ने उठकर कहा, कि उन्हें [अर्थात, गैर-यहूदियों को] खतना कराना *और* मूसा की व्यवस्था को मानने की आज्ञा देनी चाहिए।''

ये लोग यह नहीं कह रहे थे कि यदि अन्यजातियां व्यवस्था का अध्ययन करें, तो *अच्छा* होगा,[15] अर्थात वे व्यवस्था की आज्ञा मानने के *महत्व* पर बहस नहीं कर रहे थे; बल्कि वे यहूदी बनने की *अनिवार्यता* की शिक्षा दे रहे थे। उन्होंने अन्ताकिया में अन्यजातियों को बताया, ''कि यदि मूसा की रीति पर तुम्हारा खतना न हो, *तो तुम उद्धार नहीं पा सकते*।''[16] वे जानते थे कि यदि खतना करवाना केवल एक विकल्प हो, तो थोड़े अन्यजाति ही खतना करवाएंगे।[17] इसलिए, वे सिखाने लगे कि उद्धार के लिए खतना बहुत ज़रूरी है!

पौलुस और बरनबास ने देखा कि इन यहूदियों की शिक्षा, अन्यजातियों में किए उनके काम- विशेषकर उन्हें यहूदी मत धारण किए बिना यीशु में विश्वास के आधार पर अन्यजातियों को स्वीकार करने की बात पर सीधा आक्रमण था। इन मिशनरियों को पता

चल गया था कि वह बात गलत थी। वे उस शिक्षा के दूरगामी परिणामों को भी समझते थे। यदि लोग शिक्षा को मानने लग पड़े, तो मसीहियत यहूदी धर्म के ''नये और सुधरे हुए रूप'' के सिवाय कुछ और नहीं लगेगी। यरूशलेम से आने वालों ने उस द्वार को जो अन्यजातियों के लिए खोला गया था, व्यवस्था को मानने के द्वार को खोलकर और यह कहकर, कि ''यदि तुम मसीही बनना चाहते हो तो तुम्हें *इस* द्वार से आकर पहले यहूदी बनना होगा'' धम से बन्द करने की ठान रखी थी। पौलुस और बरनबास जानते थे कि यह संक्रमण उन सारी कलीसियाओं में जो उन्होंने स्थापित की थीं, फैल सकता है। यह विधर्म था और इसे *रोका जाना* आवश्यक था। हम पढ़ते हैं कि इसलिए, पौलुस और बरनबास का ''उन से बहुत झगड़ा और वाद-विवाद हुआ'' (आयत 2क)।[18]

यदि गलतियों 2:1-10 हमें इसी अवसर के बारे में बताता है तो पौलुस ने उनको जो अन्ताकिया में आए थे, कहा कि यह उन ''झूठे भाइयों के कारण हुआ, जो चोरी से घुस आए[19] थे, कि उस स्वतन्त्रता का जो मसीह यीशु में हमें मिली है, भेद लेकर हमें दास बनाएं'' (गलतियों 2:4)। ''स्वतन्त्रता'' और ''दास'' शब्दों में अन्तर पर ध्यान दीजिए: ''उस *स्वतन्त्रता* का जो मसीह यीशु में हमें मिली है,'' ''हमें *दास* बनाएं।'' पौलुस और बरनबास अन्यजातियों में स्वतन्त्रता लाए थे; यहूदी शिक्षा देने वाले उन्हें व्यवस्था की दासता में फिर से लाना चाहते थे।

झूठे शिक्षकों का विरोध करते हुए, पौलुस ने आत्मा की प्रेरणा प्राप्त एक प्रेरित के रूप में बात की; इससे मामला सुलझ जाना चाहिए था।[20] परन्तु, पौलुस उन मूल बारह प्रेरितों में से नहीं था, इसलिए कई मसीही उसकी बातों को दूसरे प्रेरितों की शिक्षा के समान आधिकारिक नहीं मानते थे।[21] यह भी सम्भव है कि अन्ताकिया में, पौलुस पर घर के नबी वाली बात लागू होती हो (यूहन्ना 4:44)। उनकी सोच जो भी हो, परन्तु अन्ताकिया में भाइयों ने ''ठहराया... कि पौलुस और बरनबास हम में से कितने और व्यक्ति इस बात के विषय में यरूशलेम को प्रेरितों और प्राचीनों के पास जाएं'' (प्रेरितों 15:2ख)। उन ''कितने और व्यक्तियों'' में संभवत: तीतुस नाम का एक जवान भी था (गलतियों 2:3)।[22]

धर्म-सभा (15:4-21)

''जब यरूशलेम में पहुंचे, तो कलीसिया और प्रेरित और प्राचीन उनसे आनन्द के साथ मिले, और उन्होंने बताया कि परमेश्वर ने उनके साथ होकर कैसे-कैसे काम किए थे'' (15:4)। इससे पूर्व पौलुस और बरनबास ने परमेश्वर को महिमा देने के लिए अन्ताकिया में कलीसिया को बताया था ''कि परमेश्वर ने हमारे साथ होकर कैसे बड़े-बड़े काम किए'' (14:27)। इस बार उनका यह बताने का ''कि परमेश्वर ने उनके साथ होकर कैसे-कैसे काम किए थे'' उद्देश्य केवल परमेश्वर को महिमा देना ही नहीं था, बल्कि यह दिखाना भी था कि अन्यजातियों में उनके मिशन को परमेश्वर ने *स्वीकृति* दे दी थी।

थोड़ी देर बाद ''फरीसियों के पंथ में से जिन्होंने विश्वास किया था, उन में से कितनों ने उठकर कहा, कि उन्हें [अन्यजातियों को] खतना कराना और मूसा की व्यवस्था को

मानने की आज्ञा देनी चाहिए'' (आयत 5)। यदि गलतियों 2 इसी दौरे के विषय में बताता है, तो उन्होंने तीतुस को भी सम्भवत: यह कोशिश करते हुए कि उनकी सभाओं में बैठने की अनुमति से पूर्व उसे कुछ शर्तों को पूरा करना होगा। उसे खतना करवाने के लिए मजबूर किया, जो कि एक गैर यहूदी मसीही था परन्तु पौलुस के कानों तक यह बात नहीं पहुंची होगी (गलतियों 2:3)।

मुद्दे स्पष्ट थे; रेखाएं खींची जा चुकी थीं। इसके बाद जो मीटिंगें हुईं, उन पर विस्तार से चर्चा हम अपने अगले पाठ में करेंगे। इस पाठ में, मैं उस एक भाषण पर ध्यान देना चाहता हूं जो दिया गया था। प्रेरितों 15:6 कहता है कि ''तब प्रेरित और प्राचीन इस बात के विषय में विचार करने के लिए इकट्ठे हुए।'' यह एक सार्वजनिक सभा थी, जिसमें ''सारी कलीसिया'' उपस्थित थी (आयत 22)। ''तब... बहुत वाद-विवाद के बाद'' पतरस खड़ा हुआ (आयत 7क)। यहूदी शिक्षा को मिलाने वाले शिक्षकों ने सोचा होगा कि पतरस, जो एक फलस्तीनी यहूदी के रूप में पला-बढ़ा था, उनकी बात में उनके साथ सहानुभूति रखेगा। वे अवश्य ही उसके मुंह से पौलुस और बरनबास के पक्ष में सुनकर चकित रह गए होंगे। पतरस का प्रवचन (आयतें 7-11) कुरनेलियुस और उसके घराने के साथ अपने अनुभवों के इर्द-गिर्द ही घूमता था (प्रेरितों 10; 11:1-18 भी देखिए)। पतरस ने कहा कि पहली बात तो यह कि परमेश्वर ने उसे अन्यजातियों के लिए उद्धार का द्वार खोलने के उद्देश्य से चुना था[23] और यह कि परमेश्वर ने उस द्वार से प्रवेश करने के लिए अन्यजातियों के खतने अथवा व्यवस्था को आवश्यक *नहीं* ठहराया था। पतरस के तर्क ज़ोरदार थे:

(1) ''मन के जांचनेवाले परमेश्वर ने उन को भी ... पवित्र आत्मा देकर उनकी गवाही दी'' (आयत 8)।[24] प्रेरितों के काम में यह दूसरी बार है कि परमेश्वर को ''मन का जांचनेवाला'' कहा गया (देखिए 1:24)। परमेश्वर बाहरी चेहरे को नहीं, बल्कि हृदय को देखता है (1 शमूएल 16:7)। यहूदी शिक्षा देने वालों ने खतनारहित अन्यजातियों के बाहर की बातों को देखा और उन्हें राज्य के लिए अयोग्य करार दे दिया, परन्तु परमेश्वर ने उनके *हृदयों* को देखा और उन्हें यहूदियों की नाईं (यदि उन से अधिक योग्य नहीं) योग्य घोषित कर दिया!

(2) परमेश्वर ने ''विश्वास के द्वारा उन के मन शुद्ध करके'' बिल्कुल उसी प्रकार जैसे यहूदियों से बनने वाले मसीहियों के मन धोए गए थे, यहूदियों और अन्यजातियों में[25] ''कुछ भेद न रखा'' (15:9)। ध्यान दें कि उनके मन ''विश्वास के द्वारा'' धोए गए थे, न कि खतने व व्यवस्था का पालन करने से। पतरस ने कुरनेलियुस को बताया था, ''कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता'' (10:34); इस सभा को उसने बताया कि परमेश्वर ने ''कुछ भेद न रखा।'' जिस प्रकार पिन्तेकुस्त के दिन यहूदियों के लिए विश्वास करना और बपतिस्मा लेना आवश्यक था (2:37, 38), वैसे ही कुरनेलियुस और उसके घराने के लिए भी करना आवश्यक था (10:43, 48)।

(3) यहूदी शिक्षा देने वाले अन्यजातियों पर खतना लादने की कोशिश करके परमेश्वर की ''परीक्षा'' ले रहे थे (आयत 10क)। व्यवस्था थोपने वालों को लगता था कि वे पौलुस

और बरनबास को चुनौती दे रहे हैं, परन्तु वास्तव में वे परमेश्वर के न्याय पर सवाल उठा रहे थे और उसके धैर्य की परीक्षा ले रहे थे![26]

(4) अन्यजातियों पर व्यवस्था को मानने की बात थोपने की कोशिश करके, वे ''चेलों की गर्दन पर ऐसा जुआ''[27] रख रहे थे (आयत 10क) जिसे कोई यहूदी उठा नहीं पाया था। हर एक ईमानदार यहूदी को उतना ही मानना होता था, जितना वह व्यवस्था से प्रेम कर सकता था (भजन 119:97), लेकिन वह हमेशा इसकी शर्तों को पूरा करने में नाकाम रहता था।[28] दिन-प्रतिदिन उसके प्राण पर बोझ बढ़ता ही जाता था जब तक कि वह थककर चूर न हो जाता। संक्षेप में, पतरस ने पूछा, ''तुम प्राण को पीसने वाला बोझ किसी पर क्यों लादना चाहते हो?''

(5) पतरस के अन्तिम शब्द अति प्रभावशाली थे: ''हां, हमारा यह तो निश्चय है, कि जिस रीति से वे प्रभु यीशु के अनुग्रह से उद्धार पाएंगे; उसी रीति से हम भी पाएंगे'' (आयत 11)। ''प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह के द्वारा उद्धार पाएंगे'' को रेखांकित कर लें। हम *अनुग्रह से* उद्धार पाते हैं, जो कि प्रभु की अनर्जित (जिसे कमाया न गया हो) कृपा है और हमारा उद्धार केवल उसी से हो सकता है! यहूदी लोग मूसा की व्यवस्था की पालना पूरी तरह से नहीं कर सके; आप और मैं किसी व्यवस्था का पालन पूरी तरह से नहीं कर सकते (रोमियों 3:23)। यदि हमारा उद्धार अनुग्रह से न हो, तो हमारा उद्धार हो ही नहीं सकेगा। उस असामान्य ढंग पर ध्यान दें कि पतरस ने ज़ोर दिया कि यहूदी और अन्यजाति दोनों का ही उद्धार अनुग्रह से हुआ था। हमें उसके यह कहने की आशा होगी, ''*हमारी* तरह *उनका* उद्धार भी अनुग्रह से हुआ'' इसके विपरीत उसने कहा, ''जिस रीति से *वे* प्रभु यीशु के अनुग्रह से उद्धार पाएंगे; उसी रीति से हम भी पाएंगे।'' अन्य शब्दों में, ''परमेश्वर ने आदेश दे दिया है कि अन्यजातियों का उद्धार अनुग्रह से होता है, व्यवस्था पालन से नहीं; और यदि हम यहूदियों का उद्धार होता है, तो हमें यह जान लेना चाहिए कि हमारा उद्धार भी अनुग्रह से होता है, व्यवस्था पालन से नहीं!''

पतरस के बोलने के बाद, पौलुस और बरनबास ने बताया कि कैसे परमेश्वर ने उनकी सेवकाई को आशीषित किया। अन्त में याकूब बोला, वही जो यीशु का सौतेला भाई था;[29] और यरूशलेम में कलीसिया का खम्भा था (गलतियों 2:9)। यहूदी शिक्षा देने वालों ने सोचा होगा कि यदि उनके इस मकसद में कोई आगे चलेगा, तो वह याकूब ही होगा।[30] एक बार फिर वे निराश ही हुए। याकूब ने शास्त्रों में से दिखाया कि परमेश्वर चाहता था कि अन्यजातियां उसकी योजनाओं और उसके उद्देश्यों का भाग बनें और यह कि परमेश्वर ने यह भविष्यवाणी *नहीं* की थी कि अन्यजातियों को पहले यहूदी बनना आवश्यक होगा।[31] याकूब ने आगे कहा, ''इसलिए मेरा विचार यह है, कि अन्यजातियों में से जो लोग परमेश्वर की ओर फिरते हैं, हम उन्हें दु:ख न दें'' (15:19)। अन्य शब्दों में ''गैर यहूदियों से बने मसीहियों पर खतना और व्यवस्था को लादकर उन्हें तंग न करें''!

सांत्वना (15:22-31)

याकूब की सिफारिशें ''सारी कलीसिया सहित प्रेरितों और प्राचीनों'' द्वारा मान ली गईं (आयत 22), और उन्होंने अन्ताकिया में कलीसिया के नाम एक पत्र भेजा।[32] पत्र में लिखा था कि यरूशलेम से आकर परेशान करने वाले लोग उनके प्रतिनिधि *नहीं* थे (आयत 24)। इस पत्र ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि परमेश्वर ने अन्यजातियों के लिए खतना करवाने और मूसा की व्यवस्था मानने की शर्त *नहीं* रखी थी (आयतें 28, 29)।[33] पत्र जब अन्ताकिया की कलीसिया में पढ़ा गया, तो गैर यहूदियों से बने मसीही ''उस उपदेश की बात से अति आनन्दित हुए'' (आयत 31)। यहूदी शिक्षा लादकर धम से दरवाज़ा बन्द करने वालों को मात मिल चुकी थी और अन्यजातियों के लिए परमेश्वर पर विश्वास का द्वार खुला रहा!

आज के धम से दरवाज़ा बन्द करने वाले

यरूशलेम में हुई बैठक में मामला सदा के लिए नहीं सुलझा। अभी अधिक देर नहीं हुई थी कि धम से दरवाज़ा बन्द करने वाले (या उनके आत्मिक चचेरे भाई) इधर-उधर, अन्यजातियों को यह बताते घूम रहे थे कि उन्हें खतना करवाना और व्यवस्था का पालन करना आवश्यक है। पौलुस के बहुत से आरम्भिक पत्रों में विशेषकर गलतियों और रोमियों के नाम पत्रियों में इस समस्या पर विस्तार से चर्चा की गई है। दुर्भाग्य से, धम से दरवाज़ा बन्द करने वाले इन लोगों की संतान बढ़ गई और वे आज भी हमारे बीच हैं।

व्यवस्था-पालक धम से दरवाज़ा बन्द करने वाले

उदाहरण के लिए, आज भी हमारे बीच ऐसे लोग हैं जो यह सिखाते हैं कि मसीहियों को पुराने नियम या उसके कुछ भाग का पालन करना चाहिए। एक धार्मिक गुट अपने पवित्र स्थानों, पृथक याजकाई, धूप, और मोमबत्तियां जलाने के अपने अधिकार को ढूंढ़ने के लिए पुराने नियम में ले जाता है। एक और गुट यह सिखाने के लिए कि मसीहियों की आराधना का विशेष दिन सप्ताह का पहला नहीं बल्कि सातवां है, निर्गमन 20 में ले जाता है। बहुत से धार्मिक संगठन अपनी परम्परागत आराधना, जिसमें वाद्य-संगीत और क्वायरें शामिल हैं, का आधार पुराने नियम के ढंगों को बनाते हैं। कई तो एक से अधिक पत्नियां रखने तक की अपनी बात को उचित ठहराने के लिए व्यवस्था का प्रयोग करते हैं।

हम में से कइयों के लिए यह समझना कठिन है कि प्रेरितों 15 में यहूदी शिक्षा देने वाले और आज व्यवस्था को लोगों पर थोपने वाले इस प्रकार की अधारभूत गलती कर सकते हैं। हम में से कई लोग बचपन से सरल रेखाचित्र देखते आ रहे हैं जिनमें पुरानी वाचा को क्रूस पर कीलों से जड़े (कुलुस्सियों 2:14, 16) और यीशु की मृत्यु से नई वाचा के प्रभाव में आते दिखाया जाता है (इब्रानियों 9:16, 17)। समझने के लिए आसान क्या हो सकता है ?

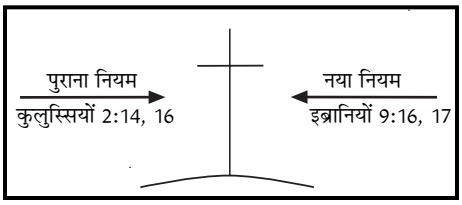

प्रेरितों 15 में यहूदी शिक्षा मिलाने वालों के विषय में, हमें याद रखना चाहिए कि गलतियों और रोमियों की पत्रियां अभी लिखी नहीं गई थीं और यहूदियों से मसीही बनने वाले लोगों को व्यवस्था के बारे में धीरे-धीरे समझ आ रही थी। दूसरी ओर, जब हम आज के व्यवस्था थोपने वालों को देखते हैं, तो हम केवल इतनी ही टिप्पणी करते हैं कि उन्हें पौलुस के पत्रों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने की आवश्यकता है। गलतियों के नाम अपनी पत्री में, पौलुस ने ज़ोर दिया कि व्यवस्था ने अपना उद्देश्य पूरा कर लिया है और हम अब इसके अधिकार के अधीन नहीं हैं (गलतियों 3:16, 19, 24, 25)। रोमियों की पुस्तक में पौलुस ने ज़ोर दिया कि ''व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके साम्हने धर्मी *नहीं* ठहरेगा'' (रोमियों 3:20), और इफिसियों के नाम अपनी पत्री में उसने केवल इतना ही कहा कि ''विश्वास के द्वारा *अनुग्रह ही से* तुम्हारा उद्धार हुआ है'' (इफिसियों 2:8)।

परम्परा थोपकर धम से दरवाज़ा बन्द करने वाले

मूसा की व्यवस्था को थोपने की कोशिश करने वाले ही हमारी आत्मिक स्वतन्त्रता के दरवाज़े को धम से बन्द करने वाले नहीं हैं। प्रेरितों 15 में फरीसियों का उल्लेख हमें स्मरण दिलाता है कि फरीसियों और मनुष्य निर्मित परम्पराएं थीं जिन्हें वे शास्त्र के समान ही बाध्य मानते थे। यीशु ने फरीसियों की शिक्षाओं की बात करते हुए कहा, कि ''वे एक ऐसे भारी बोझ को जिस को उठाना कठिन है, बांधकर मनुष्यों के कंधों पर रखते हैं...'' (मत्ती 23:4)।

ज़रूरी नहीं कि परम्पराएं अपने आप में बुरी ही हों। हम में से बहुत से लोगों की पारिवारिक परम्पराएं हैं जो पारिवारिक सम्बन्धों को सुदृढ़ करती हैं। प्रभु की कलीसिया में, आराधना और काम के लिए उन पारम्परिक तरीकों का उपयोग किया जा सकता है जिनसे शास्त्र का विरोध न होता हो। परन्तु जब हम परम्पराओं की तुलना शास्त्र से करते हैं और अपनी परम्पराओं को दूसरों पर थोपने का प्रयास करते हैं, तो मत्ती 15:9 में यीशु के इन शब्दों से हम दोषी ठहरते हैं: ''ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।''[34]

धार्मिक जगत आज मनुष्यों के बनाए धर्मसारों से भरा पड़ा है, उनमें से हर एक समाज के किसी एक भाग पर बाध्य है जो कइयों को अच्छा लगता है। उन्हें दूसरों को कुछ करने और सोचने के लिए बताने में अपनी सुरक्षा दिखाई देती है। कहा जाता है, ''गुलामी भी एक प्रकार की सुरक्षा है।''[35] परन्तु, मेरी प्रार्थना है कि हम में से कोई भी मसीह में अपनी

स्वतन्त्रता को मनुष्य के बनाए सिद्धांतों का गुलाम न बनने दे। पौलुस ने लिखा है कि, ''मसीह ने स्वतन्त्रता के लिए हमें स्वतन्त्र किया है; सो इसी में स्थिर रहो, और दासत्व के जुए में फिर से न जुतो'' (गलतियों 5:1)।

सुसमाचार के लिए संसार के अभी-अभी खुलने वाले क्षेत्रों में एक विशेष चेतावनी की आवश्यकता है (देखिए 20:28-31)। मिशन क्षेत्र में मेरे अनुभव ने मुझे सिखाया है कि किसी नये क्षेत्र में प्रभु की कलीसिया के एक बार स्थापित होने और बढ़ने के साथ ही ''चोरी से घुस [आने वाले] ... , उस स्वतन्त्रता का जो मसीह यीशु में [नये मसीहियों को] मिली है, भेद लेकर [उन्हें] दास'' (गलतियों 2:4) बनाने के लिए कोशिशें शीघ्र ही आरम्भ कर देते हैं। प्रेरितों 15 में अन्ताकिया में आने वालों ने यरूशलेम से होने का श्रेय ले लिया। आज, कई लोगों का मानना है कि कोई भी प्रचारक जो अमेरिका आदि देशों से आता है वह डॉक्टरिन में मज़बूत होगा (2 तीमुथियुस 4:3), परन्तु दुर्भाग्य से ऐसा होता नहीं है। कलीसिया पर कुछ ऐसे नियम जो उसकी अपनी ही उपजाऊ कल्पनाओं से निकले हैं, थोपने की कोशिश करने वाला परमेश्वर से नहीं है, हमें उससे सावधान रहना चाहिए।[36] मसीही अनुभव के बहुत से क्षेत्रों में, बाइबल की बुनियादी शिक्षा का उल्लंघन किए बिना हमें अपनी समझ से न्याय करने की खुली छूट है।[37] स्वतन्त्रता के इस द्वार को धम से बन्द करने की किसी को भी अनुमति न दें!

कर्मों से धम से दरवाज़ा बन्द करने वाले

एक और प्रकार के धम से दरवाज़ा बन्द करने वालों का उल्लेख किए बिना हम अपना पाठ समाप्त नहीं कर सकते-वे हैं कर्मों से उद्धार का दरवाज़ा धम से बन्द करने वाले। कई प्रकार से ये सबसे चतुर दरवाज़ा धम से बन्द करने वाले हैं अर्थात ये उनकी तरह नहीं हैं जिनका उल्लेख हम पहले कर चुके हैं, (1) वे ज़ोर देते हैं कि हम नये नियम के अधीन हैं, पुराने के नहीं; (2) वे मनुष्य की परम्पराओं की आज्ञा देते हैं; (3) वे नये नियम में दी गई परमेश्वर की आज्ञाओं को बिना कुछ जोड़े या घटाए सिखाते हैं। इस सब के लिए हम उनकी सराहना करते हैं तो फिर ख़तरा कहां है? ख़तरा इस बात में है कि धम से दरवाज़ा बन्द करने वाले ये लोग परमेश्वर के अनुग्रह के बहिष्कार तक मनुष्य की आज्ञाकारिता के लिए ज़ोर देते हैं। वे नये नियम की आज्ञाओं के स्थान पर पुराने नियम की आज्ञाओं को सिखाते हैं और दावा करते हैं कि हमारा उद्धार परमेश्वर द्वारा नये नियम में दी गई आज्ञाओं को पूरी तरह से मानने से होगा।

यह स्थिति बहुत कारणों से गलत है। पहली और महत्वपूर्ण बात, कि यह इसलिए गलत है क्योंकि बाइबल ऐसा नहीं सिखाती। प्रेरितों 15 में अपने प्रवचन में, पतरस ने ज़ोर दिया कि हमारा उद्धार ''प्रभु यीशु के अनुग्रह से'' होता है (आयत 11)। इसका अर्थ है कि अन्यजातियों का उद्धार मूसा की व्यवस्था मानने से नहीं हो सकता था। इसका यह भी अर्थ है कि साधारण तौर पर मनुष्य व्यवस्था का पालन करने से उद्धार नहीं पा सकता। इफिसियों 2:8, 9 में पौलुस ने इस सच्चाई पर ज़ोर देकर कहा: ''क्योंकि विश्वास के द्वारा

अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, बरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।'' यह परमेश्वर की आज्ञा मानने की आवश्यकता को बाहर नहीं करता (मत्ती 7:21-23; इब्रानियों 5:8, 9), परन्तु इस सम्भावना को *अवश्य* निकाल देता है कि हम में से कोई भी अपना उद्धार कमा सकता है। चाहे कुछ भी क्यों न कर लें, हम कभी भी परमेश्वर को कर्जदार नहीं बना सकते (लूका 17:10)। ''उद्धार कोई प्राप्ति से नहीं बल्कि प्रायश्चित से होता है।''

पतरस ने कहा कि कर्मों से उद्धार की बात गलत है क्योंकि यह ''चेलों की गर्दन पर ... एक जुआ (है), जिसे न हमारे बापदादे उठा सके थे और न हम उठा सकते हैं'' (प्रेरितों 15:10)। जिस प्रकार हर सच्चे इस्राएली के लिए मूसा की व्यवस्था का पूरी तरह से पालन करने की असम्भावना को मानना आवश्यक था, उसी प्रकार से हर एक सच्चे मसीही के लिए मसीह की आज्ञाओं को पूरी रीति से मानने की सम्भावना को भी स्वीकार कर लेना आवश्यक है।[38] पूरी कोशिश करने पर भी हम में कोई न कोई कमी रह ही जाती है (रोमियों 3:23; 7:15)। यदि हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर हमारा उद्धार तब तक नहीं करेगा जब तक हम उसकी आज्ञा को पूरी रीति से नहीं मानते, तो पूरी कोशिश करने पर हम डगमगा जाएंगे और कुछ भी न करने पर हमारा सर्वनाश होगा। कोई व्यक्ति जो इस डॉक्टरिन को पकड़े हुए है उसे हमेशा दोष के भार को उठाने के लिए तैयार रहना चाहिए। ''मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं!'' वह पुकारता है। ''मुझे ... कौन छुड़ाएगा?'' (रोमियों 7:24)। पतरस के संदेश की तरह यह अहसास करना कितना स्वतन्त्र करने वाला है, कि परमेश्वर हमारे जीवनों की संपूर्णता को नहीं बल्कि हमारे मनों में विश्वास को देखता है (प्रेरितों 15:8, 9)!

परमेश्वर चाहता है हममें उसकी इच्छा को पूरा करने की चाह वाला विश्वास हो (गलतियों 5:6; रोमियों 1:5; याकूब 2:26)। जो व्यक्ति यह तर्क देता है कि ''मैं अपना उद्धार नहीं कर सकता; मेरा उद्धार तो परमेश्वर के अनुग्रह से हुआ है; इसलिए, परमेश्वर की आज्ञा मानने की कोई आवश्यकता नहीं है,'' उसमें उद्धार पाने वाले विश्वास की कमी है; उसका मन परमेश्वर के सामने सही नहीं है। उद्धार अनुग्रह से होना आज्ञाकारिता की आवश्यकता को निकालता नहीं; बल्कि इसमें असम्भव अर्थात पाप रहित होने के भय की गुलामी से पाप भरा जीवन भी आता है-स्वतन्त्र अवश्य करता है।

जो व्यक्ति यह ऐलान करता है कि मेरे लिए उद्धार पाने के लिए सम्पूर्ण जीवन जीना आवश्यक है उसने मेरे सामने उद्धार के द्वार को धम से बन्द कर दिया है; क्योंकि सब कुछ कर लेने के बाद भी, मैं तो एक पापी मनुष्य ही रहूंगा। कर्मों से उद्धार का दरवाज़ा धम से बन्द करने वालों से हमें छुड़ाने के लिए आइए परमेश्वर का धन्यवाद करें!

सारांश

अगले दो पाठों में, हम ज़ोर देंगे कि भाइयों से असहमत होने पर कई बार हमें संघर्ष करना चाहिए और कई बार हार मान लेनी चाहिए। यदि कोई मसीह में हमारी स्वतन्त्रता

छीनने का प्रयास करता है, तो वह एक ऐसा अवसर है जिसमें हमें सच्चाई के लिए लड़ना चाहिए। जब झूठे शिक्षक अन्ताकिया में विश्वास का वह दरवाज़ा जिसे गैर यहूदियों के लिए परमेश्वर ने खोला था, धम से बन्द करने की ठान कर आए तो पौलुस और बरनबास ''का उनसे बहुत झगड़ा और वाद-विवाद हुआ'' (15:2)। पौलुस ने कहा, कि उसने ''उनके अधीन होना ... एक घड़ी भर न माना, इसलिए कि सुसमाचार की सच्चाई ... बनी रहे'' (गलतियों 2:5)।

जनवरी 1, 1863 को अब्राहाम लिंकन का सेक्रेट्री ऑफ़ स्टेट, विलियम हैनरी सेवर्ड, लिंकन के पास इमैंसिपेशन प्रोक्लेमेशन[39] पर हस्ताक्षर के लिए उसके पास लाया। लिंकन ने दो बार पैन उठाया और हर बार नीचे रख दिया। उसने सेवर्ड से कहा, ''मेरा हाथ सुबह नौ बजे से कांप रहा है और मेरी दाईं बाजू लगभग पंगु हो गई है। यदि इतिहास में मेरे नाम की बदनामी होगी, तो इसी दस्तावेज़ के कारण होगी। यदि अब हस्ताक्षर करते हुए मेरा हाथ कांपता है, तो लोग बाद में कागज़ की पड़ताल करके कहेंगे कि, 'लिंकन हिचकिचा रहा था; उसने मन से हस्ताक्षर नहीं किए।' जब तक मैं दृढ़ता से हस्ताक्षर नहीं कर पाता तब तक इस पर हस्ताक्षर नहीं करूंगा।'' अन्त में जब उसका हाथ ठीक हो गया, तो उसने पैन उठाया और धीरे-धीरे दृढ़तापूर्वक उस दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर कर दिए जिससे सदा के लिए घोषित हो गया कि इस देश में सभी लोग स्वतन्त्र हैं।

प्रेरितों 15 की सभा की समीक्षा करने पर हम देखते हैं कि पतरस, पौलुस, बरनबास और याकूब ने दृढ़तापूर्वक यह ऐलान किया कि मसीही लोग स्वतन्त्र हैं। जब लोग अपने जीवनों की समीक्षा करते हैं, तो मेरी प्रार्थना है कि वे हमें आत्मिक स्वतन्त्रता की घोषणा करते हुए उसी दृढ़ता में देख सकें![40]

प्रवचन नोट्स

वारेन वियर्सबे ने प्रेरितों 15:1-35 की रूपरेखा तीन ''Dओं'' के साथ दी: (1) The Dispute (झगड़ा) (आयतें 1-15), (2) The Defense (बचाव) (आयतें 6-18), और The Decision (फैसला) (आयतें 19-35)। दूसरे भाग में, उसने ध्यान दिलाया कि पतरस ने अतीत की समीक्षा की (आयतें 6-11), पौलुस और बरनबास ने वर्तमान की रिपोर्ट दी (आयत 12), और याकूब ने इस सब को भविष्य के साथ जोड़ दिया (आयतें 13-18)।

''आदमी जिसका उल्लेख करना लूका भूल गया'' के शीर्षक से तीतुस पर एक दिलचस्प अतिरिक्त प्रवचन दिया जा सकता है। तीतुस की सेवकाई के कुछ विवरणों के लिए पाद टिप्पणियां देखिए। आपको पौलुस द्वारा उसे लिखे पत्र की सामग्री भी इस्तेमाल करनी चाहिए।

पाद टिप्पणियां

[1]इस कहानी से सम्बन्धित कोई ऐसी व्यक्तिगत कहानी जोड़ी जा सकती है जिसमें यात्रा करते हुए आपको अचानक ज़ोर का झटका लगा हो। [2]सड़क में बनाई कुछ इंच ऊंची एक पट्टी को गतिरोधक कहते हैं। [3]कई यहूदियों ने विश्वास कर लिया (14:1), परन्तु मण्डलियों में बहुसंख्या गैर यहूदियों की ही होगी। [4]पौलुस और बरनबास की प्रथम यात्रा के दौरान कहीं और मण्डलियों की स्थापना हुई या नहीं, हमें नहीं बताया गया। [5]''धम से'' का मुख्य अर्थ (क्रिया के रूप में प्रयोग करने पर) है ''ज़ोर और शोर से बन्द करना।'' मैंने इस पाठ में इसका प्रयोग इसलिए किया है क्योंकि यह ''बन्द करने'' से अधिक ज़ोरदार शब्द है। जिससे सुनने वालों को अच्छी तरह समझाने के लिए अन्य शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है। [6]अधिकतर रूढ़िवादी विद्वानों का अभी भी मानना है कि ये दोनों घटनाएं एक ही हैं, परन्तु कुछ रूढ़िवादी लेखकों का निर्णय है कि गलतियों 2:1,10 यहूदिया में मसीही लोगों की परोपकारी सहायता के सम्बन्ध में पौलुस के यरूशलेम में जाने की बात करता है (11:30; 12:25)। उदाहरण के लिए, जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स ने प्रेरितों के काम पर कक्षा में सिखाते हुए हमें बताया कि गलतियों 2 और प्रेरितों 15 एक ही घटना की बात है; परन्तु बाद में जब उसने प्रेरितों के काम की पुस्तक पर दो अध्ययन पुस्तकें लिखीं, तो उसने कहा कि गलतियों 2:1-10 के आरम्भ में पौलुस के यरूशलेम जाने की बात है। [7]प्रेरितों की पुस्तक में एक कठिनाई अध्याय 15 में पौलुस का यरूशलेम में तीसरी बार जाना है, जबकि गलतियों, अध्याय 2 में उसका दूसरी बार जाना लगता है। परन्तु, पौलुस ने वास्तव में यह नहीं कहा कि गलतियों 2 में जाना उसकी दूसरी फेरी थी। उसने तो कहा, कि ''चौदह वर्ष के बाद [अपने मनपरिवर्तन के कुछ वर्ष पश्चात, गलतियों 1 वाली फेरी के बाद] मैं बरनबास के साथ *फिर* यरूशलेम को गया।'' ''फिर'' शब्द यरूशलेम में एक थोड़ी देर के लिए, जब उसके पास संभवत: किसी प्रेरित के पास जाने का अवसर नहीं था (वे या तो छिपे हुए थे या बन्दीगृह में थे), अतिरिक्त फेरी की संभावना को नकारता नहीं है (12:25 में संक्षिप्त किया गया)। [8]गलतियों 2 के पद में से मैं हर बात की व्याख्या नहीं करूंगा; ट्रुथ फ़ॉर टुडे की दूसरी पुस्तकों में गलतियों की पत्री पर चर्चा मिल जाएगी। [9]मैं ''स्पष्टतया'' शब्द का प्रयोग करता हूं क्योंकि यह उन तर्कसंगत व्याख्याओं में से एक है जो यहूदी शिक्षा देने वालों ने दीं; क्योंकि मूसा ने हमें उसका विवरण नहीं दिया है; इसलिए हम निश्चित तौर पर यह नहीं कह सकते कि उन्हें उस समय अन्ताकिया में जाने के लिए किस बात ने प्रेरित किया। [10]कुरनेलियुस परमेश्वर का भय मानने वाला व्यक्ति था, और अन्ताकिया के गैर यहूदी लोग वहां काम के आरम्भ से ही ज़बरदस्त यहूदी प्रभाव में थे (11:19-21; 13:1); परन्तु बहुत से गैर यहूदियों पर जिन्हें पौलुस ने परिवर्तित किया या तो यहूदी प्रभाव था ही नहीं या बहुत कम था। इससे कुछ यहूदी मसीही डर गए। (कुरिन्थुस की कुछ गैर यहूदी कलीसियाओं में बुराई से पता चल सकता है कि यहूदी मसीहियों को किस बात का भय था।)

[11]अपने पाठों में, हम इस तथ्य के विषय में बात कर चुके हैं कि पौलुस अपने मनपरिवर्तन से पूर्व एक फरीसी था, परन्तु लूका ने प्रेरितों की पुस्तक में 23:6 तक वह विवरण नहीं दिया। [12]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' की शब्दावली में देखिए ''फरीसी।'' [13]अधिकतर टीकाकारों को यरूशलेम की कलीसिया को ''मदर चर्च'' कहना अच्छा लगता है। ध्यान रखा जाए कि यह प्रभाव नहीं छोड़ा जाना चाहिए कि परमेश्वर ने ऐसी मण्डली स्थापित की जो दूसरी मण्डलियों की निगरानी करती थी। कलीसिया के लिए परमेश्वर के प्राथमिक प्रकाशन के स्रोत के रूप में *प्रेरितों* का *सभी* मण्डलियों के साथ एक अटूट सम्बन्ध था। उन्हें ऐसा सौभाग्य मिला जो दूसरों को नहीं मिला, परन्तु यरूशलेम की *कलीसिया* ने अन्य मण्डलियों की निगरानी नहीं रखनी थी। हर मण्डली स्वायत्त (स्व-शासित) थी। (यरूशलेम की कलीसिया के ''मदर'' चर्च होने के सम्बन्ध में, ध्यान दें गलतियों 4:26: पर ''*ऊपर* [अर्थात, स्वर्ग; पृथ्वी वाला यरूशलेम नगर नहीं] *की* यरूशलेम'' स्वतन्त्र है, और वह हमारी माता है।) [14]किसी गैर यहूदी नर के यहूदी मत धारण करने के लिए खतना मुख्य बात थी (''प्रेरितों के काम, भाग-1'' की शब्दावली में देखिए ''यहूदी मत धारण करना'')। [15]प्रेरितों 15 में ''व्यवस्था'' शब्द मूसा की व्यवस्था के लिए प्रयुक्त हुआ है (आयत 5)। इस पाठ में, मैं मूसा की व्यवस्था और सामान्य व्यवस्था की बात करूंगा। [16]आयत 5 में (dei से अनुवादित) ''चाहिए''

शब्द ज़ोर देता है कि उन्होंने अपने प्रस्ताव को वैकल्पिक नहीं माना था (देखिए प्रेरितों 1:21; रोमियों 13:5; इब्रानियों 8:3)। [17]कालान्तर में थोड़े लोगों ने ही खतना करवाया था; यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं था कि परिस्थिति बिना किसी शक्तिशाली प्रेरणा के बदल जाएगी। [18]गलतियों 2:13 यह संकेत दे सकता है कि इसमें पौलुस का विश्वास बरनबास से अधिक था। हो सकता है कि पौलुस ने यहूदी शिक्षा लाने वाले भाइयों का विरोध करने में अगुआई की हो, परन्तु शास्त्र स्पष्ट बताता है कि बरनबास ने भी झूठे शिक्षकों का विरोध किया (गलतियों 2:5 में ''हम'' शब्द पर ध्यान दें)। [19]पौलुस के कहने का तात्पर्य था कि ये लोग सच्चे मसीही नहीं थे- क्योंकि उनका निर्णय था कि वे कलीसिया को बाहर से नाश नहीं कर सके, इसलिए इसे अन्दर से नाश करने का प्रयत्न करेंगे। प्रेरितों 15:5 में इसे मिलाने में कुछ कठिनाई लगती है, जो कहता है कि पौलुस का सामना करने वाले फरीसियों ने ''विश्वास किया था,'' जिसका अर्थ यह हुआ कि वे सच्चे मन से मसीही नहीं बने थे। हमारे पास पूरा विवरण नहीं है, इसलिए हमें यह मामला प्रभु पर ही छोड़ देना चाहिए, जो सब के मनों को जानता है (प्रेरितों 15:8) और जिसे पता है कि ये लोग सच्चे मसीही थे या नहीं। [20]यरूशलेम की कलीसिया के निर्णय ने पौलुस और उसकी स्थिति को पूर्णतया निर्दोष ठहराया। पौलुस इस मामले की सच्चाई को जानने के लिए यरूशलेम *नहीं* गया।

[21]पौलुस के शत्रु जीवन भर उसकी प्रेरिताई की वैधता पर आक्रमण करते रहे, और उसे इसका उत्तर देना पड़ता था (उदाहरण के लिए, देखिए, 2 कुरिन्थियों 10-13)। [22]परम्परा के मुताबिक, अन्ताकिया लूका का गृहनगर था, इसलिए कई लोगों का अनुमान है कि तीतुस लूका का भाई था। यदि यह सत्य है, तो इससे यह स्पष्ट हो सकता है कि इन तथ्यों के बावजूद कि (1) सम्भवत: तीतुस पौलुस के द्वारा मसीही बना और वह उसको अपने निकट मानता था (तीतुस 1:4), (2) तीतुस पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा में उसका साथी था (2 कुरिन्थियों 2:13; 7:13, 14; 8:6, 16, 23; 12:18), (3) रोम में उसके प्रथम कारावास से छूटते समय (तीतुस 1:5) तीतुस उसका साथी था, और (4) तीतुस रोम में पौलुस के दूसरे कारावास के समय उसके साथ था (2 तीमुथियुस 4:10) लूका ने कभी तीतुस का उल्लेख नहीं किया। [23]''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के पाठ ''दीवारों का गिरना'' में मैंने सुझाव दिया था कि परमेश्वर ने मत्ती 16:19क की प्रतिज्ञा को पूरा करने के एक भाग के रूप में कुरनेलियुस को ''पतरस को बुलाने'' के लिए कहा। विशेष तौर पर ''प्रेरितों के काम, भाग-2'' में प्रेरितों 10:5-8 पर नोट्स देखिए। [24]''प्रेरितों के काम, भाग-2'' में 11:15-18 पर नोट्स देखिए। [25]रोमियों 3:22 में पौलुस के वाक्यांश ''कुछ भेद नहीं'' की तुलना इस कथन से करें। [26]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में प्रेरितों 5:9 पर नोट्स देखिए। [27]बैल की गर्दन पर जुआ रखने का उद्देश्य खींचे जाने वाले भार को बराबर बांटना था। परन्तु, पतरस के कहने का तात्पर्य था, कि व्यवस्था का ''जुआ'' भारी था, जो यहूदियों पर अतिरिक्त भार डालता था। यीशु ने भी अपनी शिक्षाओं को ''जुआ'' कहा (मत्ती 11:30), परन्तु उसने कहा कि उसका जुआ हल्का है; इसलिए, यह एक जुए के उद्देश्य को पूरा करने अर्थात बोझ को आसान करने के योग्य है। [28]यह समझ आ जाना चाहिए कि दोष व्यवस्था में नहीं था, बल्कि व्यवस्था को पूरी तरह से मानने में मनुष्य की अयोग्यता में था। इसीलिए हमें *अनुग्रह* के प्रबन्ध की आवश्यकता है, न कि व्यवस्था के प्रबन्ध की। केवल एक यीशु मसीह ही है जिसने व्यवस्था को सम्पूर्ण रीति से पूरा किया। [29]हम निष्कासन की प्रक्रिया से जानते हैं कि याकूब यीशु का सौतेला भाई था। एक और प्रसिद्ध याकूब केवल यूहन्ना का भाई ही था, और हम उसके सिर कटने के बारे में अध्याय 12 में पढ़ते हैं। [30]इससे मिलती-जुलती एक घटना में गड़बड़ी फैलाने वाले कई लोग गलतिया में यह दावा करते हुए आए कि वे ''याकूब की ओर से'' हैं (गलतियों 2:12)। यदि वे याकूब की ओर से थे, तो उन्होंने सम्भवत: अपनी आज्ञा का अतिक्रमण किया था। हो सकता है कि उन्होंने अपनी बात को मनवाने के लिए उसके नाम का इस्तेमाल किया हो। कुछ भी हो, उनके द्वारा याकूब के नाम का इस्तेमाल संकेत देता है कि उन्हें लगा कि याकूब भी उनके साथ ही था।

[31]प्रेरितों 15:13-21 पर नोट्स देखिए। [32]पत्र अन्ताकिया के आस-पास के क्षेत्रों के नाम भी था। [33]15:13-35 वाले अध्याय में 28 और 29 आयतों पर नोट्स देखिए। [34]परम्परावाद के विरुद्ध यीशु की चेतावनी महत्वपूर्ण है, किन्तु कइयों ने इस शिक्षा की अति कर दी है। वे स्वत: ही ''हम तो ऐसा ही करते

हैं'' की तुलना ''मनुष्य की परम्परा'' से करते हैं। यह बहुत सी परम्पराओं के विषय में सत्य है, किन्तु सभी के लिए नहीं। मसीह की कलीसियाएं *हमेशा* पवित्र शास्त्र को सिखाने पर ज़ोर देती हैं, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि यह मनुष्य की परम्परा है जिसे बन्द कर दिया जाना चाहिए। कई कार्य जो ''एक निश्चित ढंग से किए जाते हैं'' उस प्रकार इसलिए नहीं किए जाते क्योंकि वे मनुष्य की परम्परा हैं, बल्कि इसलिए किए जाते हैं क्योंकि वे ईश्वरीय परम्परा हैं (2 थिस्सलुनीकियों 3:6)। उनसे सावधान रहें जो किसी भी रीति को मिलाकर उसे ''परम्परावाद'' का नाम देते हैं। हर एक रीति के निर्णय के लिए उसे परमेश्वर के वचन के प्रकाशन की रोशनी में परखा जाना चाहिए कि क्या यह मनुष्य की परम्परा है या ईश्वरीय परम्परा। [35]गिनती 11:5 में इस्राएलियों के व्यवहार पर ध्यान दें। [36]एक उदाहरण के लिए, ''प्रेरितों के काम, भाग-3'' में प्रेरितों 11:29, 30 पर नोट्स देखिए। [37]उदाहरण के लिए, जब परमेश्वर हमें बताता है कि *क्या* करना है, परन्तु यह स्पष्ट नहीं करता कि इसे *कैसे* करना है तो वहां हम स्वतन्त्र हैं कि जो भी ढंग हमें अच्छा लगता है, उसका इस्तेमाल करें। [38]कई प्रकार से मसीह की शर्तें पुराने नियम की शर्तों से कठिन हैं (मत्ती 5 में ''परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं'' वाले भागों को देखिए)। [39]इस दस्तावेज़ से सभी गुलामों को स्वतन्त्र करने की घोषणा हुई। [40]यदि इस पाठ को एक प्रवचन के रूप में प्रयुक्त किया जाता है और आप निमन्त्रण देते हैं, तो आपको यह बताना चाहिए कि हमारे उद्धार का ''दरवाज़ा धम से बन्द करने वाला'' सबसे बड़ा *पाप* ही है। स्वतन्त्रता केवल ''मसीह में'' ही मिलती है, इसलिए यह दिखाने के लिए कि ''मसीह में'' आने के लिए परमेश्वर ने क्या कहा है निमन्त्रण में आप गलतियों 3:26, 27 का इस्तेमाल कर सकते हैं।